

मुद्रास्फीति स्थिर रहने के कारण अमेरिकी फेडरल रज़िर्व ने दरें अपरविरतति रखीं

प्रलिस के लयि:

[अमेरिकी फेडरल रज़िर्व](#), [खुदरा मुद्रास्फीति](#), [भारतीय रज़िर्व बैंक](#), [मौद्रकि नीतिसमति](#), [थोक मूलय सूचकांक \(WPI\)](#), [उपभोक्ता मूलय सूचकांक](#), [कोर मुद्रास्फीति](#), [हेडलाइन मुद्रास्फीति](#),

मेन्स के लयि:

अमेरिकी फेड दर में बढोतरी का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

[स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस](#)

चर्चा में क्यों?

[अमेरिकी फेडरल रज़िर्व](#) ने हाल ही में ब्याज दरों को **5.25% से 5.25%** के लक्ष्य के दायरे में रखा है और कहा है कि भवषिय में ऋण लेने की लागत संभवतः बढोतरी होती रहेगी। अमेरिका में वर्तमान में 3.5% वार्षकि मुद्रास्फीति देखी जा रही है, जबकयूके (UK) में 3.2% और **यूरोक्षेत्र** में 2.4% देखी जा रही है।

हाल के अमेरिकी फेडरल रज़िर्व नरिणय के पीछे क्या कारण हैं?

- **मुद्रास्फीति का दबाव:**
 - अमेरिकी मुद्रास्फीति दर 2021 और 2022 में क्रमशः 7.0% व 6.5% पर पहुँची और फरि 2023 के अंत में इसमें गरिावट आई, लेकनि यह अभी भी **3.5% के उच्च स्तर** पर बनी हुई है।
 - यह **अमेरिकी फेड के 2% के लक्ष्य** से काफी अधिक है।
 - इस नरितर मुद्रास्फीति से इंगति होता है कि ब्याज दरों को बढाने जैसे पछिले उपायों से मुद्रास्फीति में उतनी तेज़ी से कमी नहीं आई है जतिनी आशा की गई थी।
- **प्रतीक्षा करने और देखने का दृष्टिकोण:**
 - वर्ष की शुरुआत में **फेड ने अनुमान लगाया था कि मुद्रास्फीति में गरिावट आएगी** और दर में कटौती का अनुमान लगाया जाएगा। हालाँकि, मौजूदा सथति ने उन्हें पुनर्वचिार करने पर मजबूर कर दिया है।
 - **अमेरिकी फेडरल रज़िर्व** दरों को बनाए रखकर अधिक डेटा संकलति करने के लयि स्वयं को पर्याप्त समय देता है। साथ ही यह उपभोक्ताओं के खर्च के रुझान, रोजगार डेटा और मुद्रास्फीतिके उपायों पर सावधानीपूर्वक नगिरानी भी रखता है।
 - यह आँकड़ा उनके भवषिय के नरिणयों का मार्गदर्शन करेगा कि क्या मुद्रास्फीति से नपिटने के लयि दरें बढाई जाएँ या आर्थकि वकिस का समर्थन करने के लयि उन्हें अपरविरतति रखा जाए।

केंद्रीय बैंक, ब्याज दरें बढाने का सहारा क्यों लेते हैं?

- **मुद्रास्फीति** को नयितरति करने के लयि केंद्रीय बैंक **ब्याज दरों में वृद्धि** कर सकता है।
- ऐसा करने से **ऋण के रूप में ली जाने वाली धनराशकिम हो जाएगी**, जसिसे अर्थव्यवस्था को धीमा करने और लागतों की तीव्र वृद्धिको नयितरति करने में सहायता मलिंगी।
- **उच्च ऋण लागत** के साथ वयक्त और कंपनयिँ **उधार लेने के लयि कम इच्छुक** हो सकते हैं, जो आर्थकि गतविधियिँ एवं वकिस को धीमा कर सकता है।
 - ऋण लेने की बढती लागत की प्रतकिरिया स्वरुप व्यवसाय **ऋण लेने में कमी कर सकते हैं**, कम सदस्यों को नयिोजति कर सकते हैं और **उत्पादन में कमी कर सकते हैं**।

मुद्रास्फीति और इससे संबंधित पद

मुद्रास्फीति

- वस्तुओं/सेवाओं की कीमतों में वृद्धि; क्रय शक्ति में तदनुसार गिरावट
- रेंगती हुई मुद्रास्फीति (Creeping Inflation):** हल्की/मध्यम मुद्रास्फीति जहाँ मूल्य स्तर, एक निश्चित अवधि में लगातार कम दर (एकल अंकीय मुद्रास्फीति दर) पर बढ़ता है।
- कूदती हुई मुद्रास्फीति (Galloping Inflation):** यह तब होती है जब निम्न मुद्रास्फीति को नियंत्रित नहीं किया जाता है (मुद्रास्फीति दोहरे/तिहरे अंकों में - 20/100/200% वार्षिक)
- अति मुद्रास्फीति (Hyperinflation):** कीमतें सालाना मिलियन या यहाँ तक कि एक ट्रिलियन प्रतिशत तक बढ़ जाती हैं (1920 के दशक में जर्मनी में देखी गई)

कोर मुद्रास्फीति

- वस्तुओं/सेवाओं की कीमत में परिवर्तन लेकिन खाद्य/ऊर्जा क्षेत्रों को छोड़कर (कीमतों में अस्थिरता के कारण)

हेडलाइन मुद्रास्फीति

- टोकरी में सभी वस्तुओं के मूल्य में परिवर्तन (खाद्य और ऊर्जा सहित)

कोर = हेडलाइन - खाद्य एवं ईंधन सामग्री

स्टैगफ्लेशन

- जब मुद्रास्फीति, बेरोज़गारी और आर्थिक स्थिरता/मंदी एक साथ होती है; इस प्रकार की मुद्रास्फीति का प्रबंधन करना सबसे कठिन होता है
- 1970 के दशक (अमेरिका, ब्रिटेन) में विकसित देशों द्वारा इस स्थिति का सामना किया गया जब विश्व में तेल की कीमतें नाटकीय रूप से बढ़ीं

अपस्फीति

- मुद्रास्फीति का प्रतिलोम -** वस्तुओं/सेवाओं की कीमत में निरंतर गिरावट
- यहाँ, वार्षिक मुद्रास्फीति दर 0% से नीचे गिर जाती है जिसके परिणामस्वरूप मुद्रा के वास्तविक मूल्य में वृद्धि होती है (जापान को 1990 के दशक में लगभग एक दशक तक इसका सामना करना पड़ा)
- यह मंदी/अवसाद में तब्दील हो सकता है, इसलिए यह मुद्रास्फीति से भी अधिक खतरनाक है

अवस्फीति

- जब मुद्रास्फीति की दर कम हो जाती है
- इसका तात्पर्य यह है कि कीमतें प्रत्येक महीने के साथ धीमी गति से बढ़ रही हैं (मुद्रास्फीति हो रही है)

अपस्फीति कीमतों में गिरावट है, जबकि अवस्फीति मुद्रास्फीति दर में गिरावट है



मुद्रा संस्फीति

- आमतौर पर अपस्फीति का अनुसरण होता है
- नीति निर्माता मुद्रास्फीति (अधिक सरकारी खर्च, कम व्याज दरें आदि) उत्पन्न करके आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने का प्रयास करते हैं।

स्वयूप्लेशन

- इस स्थिति में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में मुद्रास्फीति की विषमता देखने को मिलती है; कुछ क्षेत्रों को भारी मुद्रास्फीति का सामना करना पड़ता है, जबकि कुछ क्षेत्रों में मुद्रास्फीति की अनुपस्थिति देखने को मिलती है और कुछ क्षेत्रों को अपस्फीति का भी सामना करना पड़ रहा है

ग्रीडफ्लेशन

- वह स्थिति जहाँ (कॉर्पोरेट) लालच मुद्रास्फीति को बढ़ावा देता है; कंपनियाँ लाभ को अधिकतम करने के लिए लागत से परे अपनी कीमतें बढ़ाती हैं

श्रृंकफ्लेशन

- यह छिपी हुई मुद्रास्फीति का एक रूप है। इससे अक्सर ग्राहकों को निराशा/असंतोष होता है
- श्रृंकफ्लेशन किसी उत्पाद के स्टिकर मूल्य को बनाए रखते हुए उसके आकार को कम करने की प्रवृत्ति है।



//

अमेरिकी फेड दरें भारतीय अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित करती हैं?

पूंजी बहरिप्रवाह:

- फेड की दर वृद्धि अमेरिकी डॉलर-मूल्यवर्ग की परसिंपततयियों (बॉण्ड, कोषागार) को और अधिक आकर्षक बनाती है। यह "कैरी ट्रेड (Carry Trade)" नामक एक घटना को प्रेरित करता है।

- नविशक, भारत जैसे कम ब्याज दर वाले देशों से धन ऋण के रूपों में लेते हैं और उच्च रटिर्न अर्जति करने के लिये इसे अमेरिका में नविश करते हैं। अन्य देशों से पूंजी (पूंजी उड़ान-Capital Flight) का यह बहरिवाह हो सकता है:
 - **धीमी आर्थिक वृद्धि:** कम वदिशी नविश भारतीय कंपनियों और समग्र अर्थव्यवस्था के विकास में बाधा बन सकता है।
 - **शेयर बाज़ारों पर प्रभाव:** वदिशी नविश की अचानक वापसी से शेयर बाज़ार में अस्थिरता हो सकती है और संभावित रूप से मूल्यांकन भी प्रभावित हो सकता है।
- **मुद्रास्फीति:**
 - **अमेरिकी फेडरल रज़िर्व दरों (US Fed Rate)** में बदलाव से पूंजी प्रवाह और वनिमिय दरें प्रभावित हो सकती है, जिसकेपरिणामस्वरूप मुद्रास्फीति हो सकती है।
 - **घरेलू ब्याज दरों और तरलता उपायों** को समायोजित करके RBI **कमज़ोर रुपए (Weaker Rupee)** के मुद्रास्फीतिप्रभावों को कम करने का प्रयास कर सकता है।
- **कमज़ोर रुपए:**
 - जब **वदिशी नविशक अधिक अमेरिकी रटिर्न** के कारण अपना पैसा भारत से बाहर निकालते हैं, तो इससे **भारत में USD की आपूर्ति कम** हो जाती है और INR की आपूर्ति बढ़ जाती है। यह असंतुलन **भारतीय रुपए** को कमज़ोर करता है।
 - इसका **दोहरा प्रभाव** है:
 - **आयातति मुद्रास्फीति:** सस्ता रुपया (Cheaper Rupees) आयात को और अधिक महँगा, विशेषकर तेल जैसे महत्त्वपूर्ण संसाधनों के लिये, बना देता है। जिससे भारत में रहने की कुल लागत में वृद्धि हो सकती है।
 - **संभावित निर्यात को बढ़ावा:** कमज़ोर रुपया **वैश्विक बाज़ार में भारतीय निर्यात को सस्ता** कर सकता है, जिससे संभावित रूप से उनकी प्रतस्पर्धात्मकता बढ़ सकती है।
- **उच्च उधार लागत:**
 - **भारतीय रज़िर्व बैंक (Reserve Bank of India- RBI)** फेड के प्रस्ताव के अनुरूप भारत में ब्याज दरें बढ़ा सकता है:
 - **मुद्रास्फीतिपर नियंत्रण:** उच्च ब्याज दरें **उधार लेने और खर्च करने** को हतोत्साहित करती हैं, जिससे संभावित रूप से मुद्रास्फीतिपर अंकुश लगाने में सहायता मिलती है।
 - **स्टेम कैपिटल फ्लाइट:** RBI का लक्ष्य घरेलू नविश को अधिक आकर्षक बनाकर भारत से **पूंजी के बहरिवाह** को रोकना है।
- **शेयर बाज़ार में उतार-चढ़ाव:**
 - इसके फलस्वरूप भारतीय शेयर बाज़ार में अस्थिरता देखी जा सकती है क्योंकि नविशक अमेरिका में बेहतर रटिर्न चाहते हैं:
 - **मांग में कमी:** वदिशी नविश कम होने से **भारतीय शेयरों की मांग कम हो सकती है**, जिससे संभावित रूप से उनकी कीमतों में गिरावट आ सकती है।
- **बढ़ा हुआ ऋण बोझ:**
 - **कमज़ोर रुपया** भारत के लिये अपने **वदिशी ऋण को चुकाना अधिक महँगा बना सकता है, जो अधिकतर अमेरिकी डॉलर** में दर्शाया जाता है। ये हो सकता है:
 - **सार्वजनिक वित्त पर दबाव:** सरकार को अपने ऋणों का भुगतान करने के लिये अधिक व्यय करने की आवश्यकता हो सकती है, जिससे अन्य महत्त्वपूर्ण विकासात्मक योजनाएँ प्रभावित हो सकती हैं।
- **बैंकों के लिये लाभ:**
 - **बैंकिंग उद्योग को ब्याज दरों में वृद्धि से लाभ** मिलता है, क्योंकि बैंक अपने ऋण पोर्टफोलियो का पुनर्मूल्यांकन अपनी जमा दरों की तुलना में बहुत तेज़ी से करते हैं, जिससे उन्हें अपना शुद्ध ब्याज मार्जिन बढ़ाने में सहायता मिलती है।

भारत अपनी अर्थव्यवस्था पर अमेरिकी फेडरल रज़िर्व के नरिणयों के प्रभाव को कैसे कम कर सकता है?

- **ब्याज दरें संतुलित करना:**
 - **दरें बढ़ाना:** भारतीय रज़िर्व बैंक (Reserve Bank of India- RBI) अमेरिकी फेडरल की बढ़ोतरी को दोहरा सकता है:
 - **वदिशी नविश को आकर्षित करना:** उच्च ब्याज दरें भारतीय बॉण्ड और अन्य नविशों को **वदिशी नविशकों के लिये अधिक आकर्षक** बना सकती हैं, संभावित रूप से रुपए की मांग बढ़ सकती है।
 - **मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना:** बढ़ी हुई ब्याज दरें, **उधार लेने और व्यय को नियंत्रित कर** सकती हैं, ये संभावित रूप से मुद्रास्फीति के नियंत्रण में सहायता कर सकती हैं, विशेषकर तब, जब यह रुपए के मूल्यह्रास के साथ जुड़ा हो।
- **रज़िर्व बास्केट (Reserve Basket) में विविधता लाना:**
 - **डॉलर पर निर्भरता कम करना:** भारत यूरो, येन या युआन जैसी अन्य प्रमुख मुद्राओं की होल्डिंग बढ़ाकर अपने **वदिशी मुद्रा भंडार में विविधता** ला सकता है।
 - इससे **अमेरिकी डॉलर के उतार-चढ़ाव** के प्रत **भारत की संवेदनशीलता कम** हो जाती है। हालाँकि, एक विविध रज़िर्व बास्केट का प्रबंधन जटिल हो सकता है।
- **व्यापार क्पतिजि का वसितार:**
 - **निर्यात बाज़ारों की खोज:** भारतीय निर्यात के लिये नए बाज़ारों की पहचान करने तथा उनमें प्रवेश करने से भारत के व्यापार आधार में विविधता लाने और अमेरिकी बाज़ारों पर इसकी निर्भरता कम करने में सहायता मिल सकती है।
 - **व्यापार समझौते:** अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौतों पर बातचीत करने से व्यापार बाधाओं को कम किया जा सकता है और गैर-अमेरिकी देशों के साथ व्यापार प्रवाह को बढ़ावा मिल सकता है।
 - इससे अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम हो जाती है।
- **घरेलू उपभोग को प्रोत्साहन:**
 - **मांग को बढ़ावा देना:** यदि **US Fed** बढ़ोतरी से अर्थव्यवस्था धीमी हो जाती है, तो सरकार घरेलू खपत को प्रोत्साहित करने के लिये उपाय

लागू कर सकती है:

- **कर में कटौती:** करों को कम करने से लोगों की आय में वृद्धि देखने को मिलती है, संभावित रूप से खर्च बढ़ सकता है और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिल सकता है।
 - वर्ष 2020 में भारत सरकार ने नचिले कर ब्रैकेट में आयकर दाताओं के लिये कर छूट बढ़ा दी। इसका उद्देश्य COVID-19 महामारी के दौरान उपभोग व्यय को बढ़ावा देना है।
- **सब्सिडी:** आवश्यक वस्तुओं एवं सेवाओं के लिये लक्षित सब्सिडी उपभोक्ताओं पर बोझ कम करने और क्रय शक्ति बनाए रखने में सहायता कर सकती है। [सार्वजनिक वितरण प्रणाली \(Public Distribution System- PDS\)](#), [प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना \(Pradhan Mantri Ujjwala Yojana- PMUY\)](#) ऐसी सरकारी पहलों के उदाहरण हैं।

■ **तेल पर नरिभरता कम करना:**

- **नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाना:** डॉलर मज़बूत होने से अक्सर तेल की कीमतों में वृद्धि होती है। भारत सौर, पवन और अन्य नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में निवेश करके इसे नियंत्रित कर सकता है।
 - यह आयातित तेल पर नरिभरता को कम कर सकता है और किसी भी अर्थव्यवस्था को तेल की कीमतों में होने वाले उतार-चढ़ाव से बचा सकता है।
- **जैव ईंधन की खोज:** इथेनॉल जैसे जैव ईंधन का विकास वैकल्पिक ईंधन स्रोत प्रदान कर सकता है, जिससे आयातित तेल पर नरिभरता कम हो सकती है।

दृष्टिभेन्स प्रश्न:

प्रश्न. भारतीय अर्थव्यवस्था पर अमेरिकी फेड (US Fed) दर वृद्धि के प्रभाव के बारे में चर्चा कीजिये। भारत अपनी अर्थव्यवस्था पर अमेरिकी फेडरल रज़िर्व (US Federal Reserve) के नरिण्यों के प्रभाव द्वारा कैसे नपिट सकता है?

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. भारतीय सरकारी बॉण्ड प्रतफिल नमिनलखिति में से कसिसे/कनिसे प्रभावति होता है/होते हैं? (2021)

1. यूनाइटेड स्टेट्स फेडरल रज़िर्व की कार्रवाई
2. भारतीय रज़िर्व बैंक की कार्रवाई
3. मुद्रास्फीति एवं अलपावधि ब्याज दर

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये।

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (d)

प्रश्न. नमिनलखिति कथनों पर वचिार कीजिये: (2022)

1. US फेडरल रज़िर्व की सख्त मुद्रा नीति पूंजी पलायन की ओर ले जा सकती है।
2. पूंजी पलायन वर्तमान वदेशी वाणजियिक ऋणग्रहण (External Commercial Borrowings (ECBs) वाली फर्मों की ब्याज लागत को बढ़ा सकता है।
3. घरेलू मुद्रा का अवमूल्यन, ECBs से संबद्ध मुद्रा जोखमि को घटाता है।

उपर्युक्त कथनों में कौन-से सही हैं ?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

??????:

प्रश्न. क्या आप इस मत से सहमत हैं कि सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) की स्थायी संवृद्धि तथा नमिन मुद्रास्फीति के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था अच्छी स्थिति में है? अपने तर्कों के समर्थन में कारण दीजिये। (2019)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/us-federal-reserve-keeps-rates-steady-as-inflation-persists>

